B.A (Hons) Sanskrit
Part - I
Paper - I

डॉ अपर्णा कुमारी
स०प्रा०(गेस्ट फैकल्टी)

Q. मेघदूत का सामान्य परिचय।

Ans. संस्कृत के गीतिकाव्य साहित्य का परम उज्ज्वलरत्न कालिदास विरचित मेघदूत है। यह खण्डकाव्य की संज्ञा से अभिहित है। इसमें 121 पद्यों में कवि ने विरही यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया है। इसके दो भाग हैं — पूर्वमेघ और उत्तरमेघ।

पूर्वमेघ में अलकापुरी के अधीश्वर कुबेर ने अपने किंकर (सेवक) यक्ष को, जो प्रतिदिन मानसरोवर से स्वर्ण कमल लाने के काम पर लगा हुआ था, इस कर्तव्यपालन में कुछ शिथिलता लाने के कारण एक वर्ष के लिए राज्य से निर्वासित कर दिया। वह शापावधि में रामगिरि पर्वत पर अपना विरही दिन व्यतीत करने लगता है। शाप के लगभग 8 मास व्यतीत होने पर आषाढ मास के प्रथम दिन विरह की उत्कट वेदना जाग्रत होती है। वह अपने प्रिया के लिए व्याकुल है। वह यक्ष विचार करता है कि मेरी पत्नी यक्षिणी की भी तो विरह में यही दशा होती होगी। यह सोचकर वह मेघ को अपना दूत बनाकर कुशल सन्देश अपनी प्रियतमा के पास ले जाने को कहता है। वह यह विचार भी नहीं करता है कि यह मेघ उसका सन्देश ले जाने में समर्थ है या नहीं, यक्ष उस मेघ को रामगिरि से अलकापुरी तक का मार्ग दिखलाता है या बताता है। और यक्ष उस मेघ से कहता है कि कुछ विशिष्ट स्थानों पर हे मेघ विश्राम करते हुए अलकापुरी तक जाना। इसप्रकार कवि पूर्वमेघ में रामगिरि से लेकर अलकापुरी तक के मार्ग का वर्णन निम्न प्रकार से करता है —

मालप्रदेश, आम्रकूट पर्वत, नर्मदा नदी, विदिशा नगरी, नीचैर्गिरि, निर्विन्ध्या नदी, उज्जयिनी, क्षिप्रा नदी, देवगिरि, चर्मण्वती नदी, कुरुक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखलनदी, गंगानदी हिमालय पर्वत, कैलास और अलका नगरी।

उत्तरमेघ में अलकापुरी के भवन तथा यक्ष की पत्नी की विरह दशाओं का वर्णन किया गया है। प्रत्येक श्लोक वियोगावस्था का जीता-जागता चित्र उपस्थित करता है। इस वर्णन में ऐसा लगता है कि कालिदास एक कवि ही नहीं अपितु एक वियोगिनी स्त्री की भावनाओं, परिस्थितियों तथा हार्दिक संवेदनाओं के गूढ अध्येता भी हैं। कालिदास ने प्रकृति वर्णन के साथ-साथ नगर और ग्राम का भी अद्भुत वर्णन किया है। यक्ष ने मेघ को सन्देश दिया कि मेरे वियोग में खिन्न मन, उदास, तुषारापात से म्लान पद्मिनी के समान दिखाई देनेवाली मेरी पत्नी से कहना कि तुम खिन्न न हो। वियोग के शेष-चार माह को धैर्य से व्यतीत करना, सुख-दुःख का चक्र बदलता रहता है, मिलन

अवश्य होगा क्योंकि दुःख के पश्चात् सुख के दिन आने वाले हैं। मैं भी यही सोचकर समय व्यतीत कर रहा हूँ।

मेघदूत की कल्पना शृंगारिक होते हुये भी उसमें शिष्ट नैतिकता का त्याग नहीं किया गया है। यक्ष दम्पती का प्रेम मानवीय प्रेम का ही आदर्श प्रतिरूप है।

अतः महाकवि कालिदास ने प्रस्तुत गीति काव्य में वियोग के पोषक सच्चे प्रेम को दर्शाया है जो कि परिणति का विधायक है।